इकाई 2 गृहारम्भ में वृषभवास्तु चक्र शुद्धि एवं मासादि विचार

इकाई की संरचना

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 गृहनिर्माण में मुहूर्त विचार का महत्त्व

2.4 वृषभवास्तु चक्रशुद्धि

2.5 गृहारम्भ में मासादि विचार

2.5.1 कालशुद्धि विचार

2.5.2 मास विचार

2.6 सारांश

2.7 पारिभाषिक शब्दावली

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.10 सन्दर्भ/ सहायक पाठ्य सामग्री

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप बता सकेंगे कि :

- समझा सकेंगे कि नींव खोदने एवं गृहारम्भ के मुहूर्त का ज्ञान व्यावहारिक है तथा इसी के लिए इनका अध्ययन किया जाता है।
- किस प्रकार वृषवास्तु चक्र शुद्धि को निकाला जाता है।
- नींव खोदने एवं गृहारम्भ के मुहूर्तों में प्राचीन ऋषि मुनियों एवं आचार्यों के विचारों के अनुरूप मुहूर्त शोधन को श्रेणीबद्ध कर सकेंगे।
- नींव खोदने एवं गृहारम्भ मुहूर्तों के विभिन्न अंगों में से मासादि विचार हेतु अनेक मन्तव्यों का विवेचन कर निष्कर्ष निकाल सकेंगे
- वृषवास्तुचक्र शुद्धि एवं मासादि विचार को प्रायोगिक रूप से प्रयोग कर सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना

गृहारम्भ मुहूर्त से सम्बन्धित इस इकाई में आपका स्वागत है। इससे पहले राहुमुख एवं खातविचार का आपने अध्ययन किया है। इनकी गृहारम्भ में क्या आवश्यकता है? राहुमुख एवं खातखनन में किस प्रकार विचार करना चाहिए? आदि। नींव खोदना एवं उसके पश्चात् गृह के निर्माण कार्य का आरम्भ करना, भारतीय वास्तुशास्त्र की दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण

कार्य है। इस कार्य को शुभ मुहूर्त में करने से गृहनिर्माण शुभफलदायी, विघ्न-बाधारहित एवं गृहनिवासियों के लिए सुख व शान्तिकारक होता है। अतः नींव खोदने एवं गृहारम्भ के लिए शुभ मुभूतों के महत्व को जानते हुए हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों एवं आचार्यों ने इस विषय में गहन चिन्तन एवं खोज के बाद अपने अनुभव के आधार पर मुहूर्त शोधन के विषय में चर्चा की है कि इसके लिए कौन-कौन सी तिथियां, नक्षत्र, योग, करण, लग्नादि शुभ है तथा इस विषय में अन्य किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। प्रस्तुत इकाई में विस्तार से मुहूर्तशोधन के विभिन्न आयामों में से वृषभवास्तु चक्र एवं मासादि के बारे में विभिन्न विचार एवं मतों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप गृहारम्भ मुहूर्त के महत्वपूर्ण विषय वृषभ वास्तु चक्र एवं मासादि विचार को समझा सकेंगे। साथ ही इनके विभिन्न पक्षों का सम्यक विश्लेषण कर सकेंगे।

2.3 गृहनिर्माण में मुहूर्त विचार का महत्त्व

हमारे जीवन में गृहनिर्माण का अत्यधिक महत्व है। गृहनिर्माण के महत्व को वास्तुशास्त्र के आचार्यों ने इस प्रकार कहा है-

" स्त्रीपुत्रादिकभोगसौख्यजननं धर्मार्थकामप्रदं
जन्तूनामयनं सुखास्पदमिदं शीताम्बुघर्मापहम् ।

वापीदेवगृहादिपुण्यमखिलं गेहात्समुत्पद्यते
गेहं पूर्वमुशन्ति तेन विबुधाः श्रीविश्वकर्मादयः ।। "

अर्थात् गृह, स्त्री-पुत्रादि भोगों और सुख को प्रदान करने वाला ,धर्म ,अर्थ और काम को देने वाला ,प्राणियों को सुख प्रदान करने वाला आश्रय स्थल , ग्रीष्मादि ऋतुओं से रक्षा करने वाला है । केवल गृहनिर्माण से ही वापी, देवमन्दिरादि के निर्माण का समस्त पुण्यफल प्राप्त हो जाता है । अतः विश्वकर्मादि देवों ने सर्वप्रथम गृहनिर्माण के लिए आदेश किया है ।

इस प्रकार से इन सभी शुभ पदार्थों का प्रदायक तथा रक्षक होने के कारण गृह का निर्माण करना अत्यन्त शुभ माना जाता है । अतः ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों ने गृहनिर्माण रूपी इस शुभ कार्य में मुहूर्त चिन्तन को अत्यन्त आवश्यक माना है । अगर गृह निर्माण का आरम्भ शुभ समय में किया जाए तो उस गृह का निर्माण कार्य अत्यन्त द्रुत गति से तथा विना किसी बाधा के सम्पन्न हो जाता है और अगर गृह निर्माण का आरम्भ अशुभ समय में किया जाए तो गृह निर्माण का कार्य अत्यन्त मन्द गति से चलता है और गृहपति को निर्माण कार्य में अनेकों बाधाओं का सामना करना पडता है और कई बार तो निर्माण कार्य भी अपूर्ण ही रह जाता है अतः गृह के निर्माण कार्य का आरम्भ सदैव शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए । शुभ मुहूर्त में किए गये गृह निर्माण से उसमें वास करने वाले गृहजनों का जीवन सुखमय और समृद्ध रहता है जबकि अशुभ मुहूर्त में किए गये गृहनिर्माण से उसमें वास करने वाले गृहजनों को दुःखों का सामना करना पडता है उनका जीवन अशान्त रहता है। वे रोग और क्लेश से पीडित रहते है अतः मनुष्य को गृहारम्भ से पूर्व निश्चित ही मुहूर्त का विचार करना चाहिए और शुभ समय का चयन कर नूतन गृह का निर्माण कार्य आरम्भ करना चाहिए क्योंकि संसार के जितने भी प्राणी है ,उनमे से चयन का अधिकार केवल मनुष्य के पास ही है । मनुष्य क्या खाएगा ? यह वह चयन कर सकता है ।

मनुष्य क्या पीएगा ? यह भी वह चुनता है मनुष्य क्या पढेगा ? मनुष्य कब सोएगा ? मनुष्य कब जागेगा इत्यादि समस्त कार्यो मे वह स्वतन्त्र है और वह चयन कर अपने कार्यो का सम्पादन करता है जबकि चयन की यह स्वतन्त्रता सृष्टि के अन्य जीवों ,पशु-पक्षियों के पास नही है अगर अपने इस विशेष गुण का प्रयोग मनुष्य गृहनिर्माण के लिए शुभ समय के चयन में नही करता है तो वह मनुष्य ही इसके लिए दोषी होगा अतः मनुष्य को चाहिए कि वह ऋषियों द्वारा प्रणीत मुहूर्त ग्रन्थों के आधार पर शुभ समय का चयन कर गृह-निर्माण कार्य का शुभारम्भ करें ताकि गृह-निर्माण कार्य निर्विघ्न रुप से सम्पन्न हो सके तथा गृहजनो को उस गृह में सुख , शान्ति और समृद्धि की प्राप्ति हो सके। आइये अब गृहारम्भ मुहूर्त के महत्वपूर्ण आयामों को वृषवास्तु चक्र एवं गृहारम्भ के लिए मासादि विचार पर विशेष अध्ययन करते हैं।

2.4 वृषभवास्तु चक्रशुद्धि

गृहारम्भ के दिन के चन्द्र नक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र की गणना के आधार पर वास्तुक्षेत्र की शुभता या अशुभता का अनुमान करना ही चक्रशुद्धि विचार है। इस चक्रशुद्धि विचार को हम वृषवास्तुचक्र द्वारा जान सकते है। इस हेतु वास्तु पुरूष की कल्पना बैल के रूप में की गयी है जिसके शरीर में सूर्य नक्षत्र से गिनकर नक्षत्र स्थापित करना चाहिए। इसमें चन्द्रस्थित नक्षत्र की स्थिति को देखकर शुभ या अशुभ फल निम्न प्रकार से समझना चाहिए। यहाँ ध्यान देना है कि इस चक्र में अभिजित् सहित 28 नक्षत्रों की गणना करनी है।

वृषचक्रं वृषाकारं सर्वावयवसंयुतम्।
यस्मिन् ऋक्षे स्थितो भानुस्तत्रादौ त्रीणि मस्तके।।

अग्रपादे च चत्वारि पुनश्चत्वारि पश्चिमे।
पृष्ठे त्रीणि च धिष्ण्यानि कुक्षौ चत्वारि दक्षिणे।।

पुच्छे त्रीणि च धिष्ण्यानि कुक्षौ चत्वारि वामके।
मुखे त्रीणि च धिष्ण्यानि अष्टाविंशतितारकाः।।

सूर्य जिस नक्षत्र पर स्थित हो, वहां से 3 नक्षत्र शिर पर, उससे आगे के 4 नक्षत्र अगले पैरों पर होते है। इसके आगे के क्रमशः 4 नक्षत्र पिछले पैर पर, 3 नक्षत्र पीठ पर और 4 नक्षत्र दाहिनी कोख में रहते हैं। इसके बाद शेष 3 नक्षत्र पूंछ पर, 4 नक्षत्र बायीं कोख में तथा 3 नक्षत्र मुख में होते हैं। इस प्रकार वृषवास्तु चक्र में अठ्ठाईस नक्षत्रों की गणना होती है।

इसका फल इस प्रकार कहा गया है-

शिरसा वज्रपातः स्यादुद्वेगञ्चाग्रपादयोः।
स्थिरत्वं पश्चिमे पादे पृष्ठे चैव धनागमे।।

दक्षकुक्षौ जयो लाभः पुच्छे स्वामिविनाशनम्।
वामकुक्षौ च दारिद्र्यं मुखे पीडा निरन्तरम्।।
सूर्यभात्तु त्यजेत्सप्त ततश्चैकादशे धनम्।
ततोन्यभेषु दुष्टं स्यादिति वास्तुनिकीर्तनम्।।

अर्थात् वृषवास्तु के मस्तक में गृहारम्भ नक्षत्र होने पर वज्रपात, अग्रपाद में उद्वेग, पीछे के पाद में स्थिरत्व, पीठ पर धनागम, दक्षिण कुक्षि में विजयलाभ, पूँछ में स्वामीनाश, बायें कुक्षि में दारिद्र्य एवं मुख में निरन्तर पीडा जानना चाहिए।

मतान्तर से वृषवास्तु चक्र इस प्रकार कहा गया है-

सूर्यभाद्गणयेद्वास्तुचक्रं च दिनभावधि।
अश्वरुद्रदशर्क्षञ्च ह्यशुभं शुभदं क्रमात्। ।

अर्थात् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भदिन के चन्द्रनक्षत्र तक गिनने पर प्रथम अश्व अर्थात् सात नक्षत्र होने पर अशुभ, आगे के रुद्र अर्थात् एकादश नक्षत्र होने पर शुभ तथा उसके आगे के दश नक्षत्र होने पर अशुभ जानना चाहिए।

नक्षत्र संख्या	सात (1-7)	एकादश (8-18)	दश(19-28)
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ

पुनः प्रकारान्तर से वृषवास्तु चक्र इस प्रकार कहा गया है-

त्रिवेदवेदाग्नियुगाग्निवेदत्रिकेषु भानोः शशिभं गृहेषु।
दाहो विनाशः स्थिरताधनश्रीः शून्यञ्च दारिद्र्य मृतिः क्रमेण। ।

अर्थात् गृहारम्भ दिन के सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनने पर क्रमशः त्रि (तीन), वेद (चार), वेद (चार), अग्नि (तीन), युग (चार), अग्नि (तीन), वेद (चार) एवं त्रिक (तीन) नक्षत्र आने पर क्रमशः अग्निदाह, विनाश, स्थिरता, धन, श्री (लक्ष्मीप्राप्ति), शून्य, दारिद्र्य एवं मृत्यु को जानना चाहिए।

इस प्रकार उपर्युक्त तीनों प्रकारों के निष्कर्षरूप में कहा जा सकता है कि सूर्य जिस नक्षत्र पर स्थित हो, वहां से 3 नक्षत्र शिर पर, उससे आगे के 4 नक्षत्र अगले पैरों पर होते है। ये सातों नक्षत्र क्रमशः अग्निदाह और शून्यफलकर्ता है अतः इनमें गृहारम्भ नही करना चाहिए। इसके आगे के क्रमशः 4 नक्षत्र पिछले पैर पर, 3 नक्षत्र पीठ पर और 4 नक्षत्र दाहिनी कोख में रहते है इनमें गृहारम्भ करने से क्रमशः स्थिरता , धनप्राप्ति तथा लाभ होता है। इन ग्यारह नक्षत्रों में ही गृहारम्भ करना चाहिए। इसके बाद शेष 3 नक्षत्र पूँछ पर , 4 नक्षत्र बायीं कोख में तथा 3 नक्षत्र मुख में होते है। इनका फल क्रमशः दरिद्रता तथा पीडादायक रहता है अतः इन नक्षत्रों में भी गृहारम्भ नहीं करना चाहिए। इसे सारिणी के रूप में इस प्रकार समझा जा सकता है-

स्थान	**शिर**	**अग्रपाद**	**पृष्ठपाद**	**पृष्ठ**	**दक्षिणकुक्षि**	**वामकुक्षि**	**पुच्छ**	**मुख**
नक्षत्र संख्या	1-3	4-7	8-11	12-14	15-18	19-22	23-25	26-28
फल	अग्निदाह	उद्वेग	स्थिरता	धनागम	लाभ	दरिद्रता	स्वामीपीडा	पीडा

उदाहरण - गृहारम्भ के दिन रोहिणी नक्षत्र में सूर्य है। इस दिन चन्द्र पुष्य नक्षत्र में है। अब हम वृषवास्तुचक्र में निम्न प्रकार से नक्षत्र स्थापित करेंगे।

स्थान	वृषशिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिणकुक्षि	वामकुक्षि	पुच्छ	मुख
नक्षत्र संख्या	1-3 रोहिणी, मृगशिरा आर्द्रा	4-7 पुनर्वसु पुष्य, आश्लेषा मघा	8-11 पू.फा. उ.फा. हस्त चित्रा	12-14 स्वाती, विशाखा अनुराधा	15-18 ज्येष्ठा मूल पू.षा. उ.षा.	19-22 अभिजित् श्रवण धनिष्ठा शतभिषा	23-25 पू.भा. उ.भा. रेवती	26-28 अश्विनी भरणी कृत्तिका
फल	अग्निदाह	उद्वेग	स्थिरता	धनागम	लाभ	दरिद्रता	स्वामी पीडा	पीडा

ऊपर तालिका में लिखित स्थान के अनुसार सूर्यनक्षत्र रोहिणी से गिनकर रोहिणी, मृगशिरा व आर्द्रा इन तीन नक्षत्रों को बैल के शिरस्थान में रखा गया है। उसके बाद बैल के आगे के पांवों में अग्रिम चार नक्षत्र पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा रखे गये है। उसके बाद पुनःअग्रिम चार नक्षत्र पू. फा. उ. फा., हस्त व चित्रा बैल के पीछे के पांवों में रखे है। इस प्रकार बैल के शरीर के अंगों में सूर्यनक्षत्र से आरम्भ कर नक्षत्र स्थापित करने है। यहां चन्द्र नक्षत्र पुष्य है जो वृषवास्तु के आगे के पांव में स्थित है जिसका फल उद्वेग, रिक्तता या शून्यता है। अतः यह दिन गृहारम्भ के लिए अशुभ है।

कुछ विद्वानों के अनुसार गृहारम्भ में वृषवास्तु चक्र की तरह ही कूर्मचक्र का विचार भी करना चाहिए। अतः प्रसंगवश कूर्मचक्र का विचार प्रस्तुत है।

कूर्मचक्र - तिथि को 5 से गुणा कर कृत्तिकादि से वर्तमान चन्द्रनक्षत्र तक गणना कर प्राप्त संख्या को जोडने पर और उसमे 12 जोड कर 9 से भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल इस प्रकार जानना चाहिए यथा –

(तिथि x 5 + (कृत्तिकादि से वर्तमान चन्द्रनक्षत्र पर्यन्त संख्या) + 12)/ 9

इस सूत्र से प्राप्त शेष के अनुसार निम्न सारिणी से कूर्मचक्र का शुभाशुभत्व जानना चाहिए-

स्थान	जल	स्थल	आकाश
शेष	1,4,7	2,5,8	0,3,6
फल	लाभ	हानि	मृत्यु

उदाहरण - चैत्र शुक्ल नवमी तथा पुष्यनक्षत्र है। क्योंकि ((तिथि संख्या × 5) + कृत्तिकादि नक्षत्रादि संख्या + 12) 9 = शेष कूर्मनिवास स्थान।

अतः ((9 तिथि संख्या X 5) +6 कृत्तिकादि नक्षत्रादि संख्या +12) / 9 = 0 शेष अर्थात् कूर्मनिवास आकाश।

यहाँ शेष शून्य है अतः इस दिन कूर्म का निवास आकाश में है जिसके कारण इस दिन गृहारम्भ करने पर कष्ट मिलने की सम्भावना होती है।

अभ्यास प्रश्न

1. केवल गृहनिर्माण से ही किन किन को निर्माण करने का समस्त पुण्यफल प्राप्त हो जाता है ?

2. गृह निर्माण का आरम्भ अशुभ समय में किया जाए तो क्या फल मिलता है?
3. गृहारम्भ के दिन के चन्द्र नक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र की गणना के आधार पर वास्तुक्षेत्र की शुभता या अशुभता का अनुमान करना क्या है?
4. वृषवास्तुचक्र में वास्तु पुरूष की कल्पना किस पशु के रूप में की गयी है?
5. वृषवास्तुचक्र में कितने नक्षत्रों की गणना करते हैं?
6. सूर्य जिस नक्षत्र पर स्थित हो, वहां से कितने नक्षत्र सिर पर गिनने चाहिए?
7. वृषवास्तु के मस्तक में गृहारम्भ नक्षत्र होने पर क्या फल प्राप्त होता है?
8. वृषवास्तु के बायें कुक्षि में गृहारम्भ नक्षत्र होने पर क्या फल प्राप्त होता है?
9. सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भदिन के चन्द्रनक्षत्र तक गिनने पर प्रथम सात नक्षत्र होने पर क्या फल होता है?
10. अश्व शब्द से कितनी संख्या लेनी चाहिए?
11. रुद्र शब्द से कितनी संख्या लेनी चाहिए?
12. वेद शब्द से कितनी संख्या लेनी चाहिए?
13. युग शब्द से कितनी संख्या लेनी चाहिए?
14. अग्नि शब्द से कितनी संख्या लेनी चाहिए?
15. वृषवास्तु के पीठ में गृहारम्भ नक्षत्र होने पर क्या फल प्राप्त होता है?
16. गृहारम्भ के दिन रोहिणी नक्षत्र में सूर्य तथा चन्द्र नक्षत्र पुष्य हो तो गृहारम्भ का क्या फल होगा?
17. कूर्मचक्र का विचार कैसे करते हैं?
18. यदि चैत्र शुक्ल नवमी को पुष्यनक्षत्र है तो कूर्मचक्र का विचार से क्या फल होता है?

2.5 गृहारम्भ में मासादि विचार

कर्मसिद्धिः सुखायूंषि निमित्तशकुनादिभिः।
ज्ञात्वा प्रष्टुर्गृहारम्भे कीर्तयेत्समयं बुधैः।।

अर्थात् कर्मसिद्धि, सुख एवं आयुष्य के लिए निमित्त, शकुन आदि का विचार कर बुद्धिमानों को गृहारम्भ समय बतलाना चाहिए।

कालनरस्य यदङ्गं सौम्यग्रहवीक्षितं युतं वापि।
तच्चेत्स्पृशति प्रष्टा तदास्यनिर्माणमादेश्यम्।।

प्रश्नकाल में प्रश्नकर्त्ता जिस अङ्ग का स्पर्श कर प्रश्न करे, कालपुरुष का वह अङ्ग यदि शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो गृहारम्भ का आदेश करना चाहिए।

गृहस्थस्य क्रियाः सर्वा न सिद्धयन्ति गृहं विना
यतस्तस्माद् गृहारम्भ प्रवेशसमयो ब्रुवे।।

अर्थात् गृहस्थ की सभी क्रियायें गृह के विना पूर्ण नही हो सकती अतः गृहारम्भ और गृहप्रवेश के समय की चर्चा की जाती है। सर्वप्रथम हम गृहारम्भ के मुहूर्तो की चर्चा करेंगे। इस प्रकार विचार करते हुए गृहारम्भ हेतु सर्वप्रथम कालशुद्धि एवं मासादि विचार करना चाहिए।

2.5.1 कालशुद्धि विचार

वृद्धनारद के मत के अनुसार-

आरम्भं च समाप्तिं च प्रासादपुरसद्मनाम्।
उत्थिते केशवे कुर्यान्न प्रसुप्ते कदाचन।।

अर्थात् गृहादि निर्माण का आरम्भ एवं समाप्ति भगवान् विष्णु के शयन दिवसों अर्थात् आषाढ़ शुक्ल एकादशी (हरिशयनी एकादशी) से कार्तिक शुक्ल एकादशी (हरिबोधिनी एकादशी) तक में नहीं करना चाहिए। वसिष्ठ का मत है कि गुरु एवं शुक्र के उदय रहने पर ही गृहारम्भ करना चाहिए, अस्त होने पर नहीं। यथा-

गीर्वाणपूर्वगीर्वाणमन्त्रिणोर्दृश्यमानयोः।
शुक्लपक्षे दिवाकार्यं न निर्माणञ्च रात्रिषु।।

इसी प्रकार शुक्लपक्ष में दिन में ही गृहारम्भ शुभ होता है। रात्रि में निर्माण कार्य शुभ नहीं होता। क्योंकि शुक्लपक्ष में गृहारम्भ करने से सौख्य तथा कृष्णपक्ष में गृहारम्भ करने से चोरों का भय बना रहता है-

शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम्।।

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तक अर्थात् होली से पूर्व के 8 दिन का होलाष्टक भी विवाहादि शुभ कार्यों में निषिद्ध होने के कारण गृहारम्भ में भी नहीं लेना चाहिए। होलाष्टक के बारे में मुहूर्तचिन्तामणि में कहा गया है कि-

विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्वाश्च त्रिपुष्करे।
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम्।।

शीघ्रबोध

शुक्लाष्टमीं समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्।
पूर्णिमावधिकं त्याज्यं होलिकाष्टकमिदं शुभे।।

अर्थात् विपाशा नदी (व्यास), इरावती (रावी), शतुद्रु (सतलज) के तटवर्ती तथा त्रिपुष्कर में होलिका से पूर्व के आठ दिन विवाहादि शुभ कार्यों के लिए शुभ नहीं हैं।

इसी प्रकार वास्तु कृत्य अर्थात् गृहारम्भ, नींव खोदना इत्यादि कार्य ठीक मध्याह्न में, दोनों सन्ध्या कालों में तथा मध्य रात्रि में नहीं करना चाहिए। यथा-

ध्रुवं दृष्ट्वाथवा स्मृत्वा कर्तव्यं वास्तुरोपणम्।
सूर्यारवर्ज्यं दिवसे रात्रौ त्यक्त्वा महानिशम्।।

मध्याह्ने तु कृतं यत्तु वास्तुकर्तुर्विनाशदम्।
निशीथे वाथवा सन्ध्योर्वास्तु नैव कारयेत्।।

इस काल के अतिरिक्त प्रातः, पूर्वाह्ण, अपराह्ण इत्यादि में वास्तुकृत्य करना शुभ होता है। अधिकमास, भीष्मपंचक, श्राद्धपक्ष इत्यादि में भी सामान्यतः गृहारम्भ नहीं करते है। इस प्रकार गृहारम्भ में कालशुद्धि का विचार किया जाता है।

2.5.2 मास विचार

वृद्ध नारद जी का मत है कि चैत्र मास में गृहादि का निर्माण करने पर शोक, वैशाख में धनलाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशु हरण, श्रावण में पशुवृद्धि, भाद्रपद में शून्य अर्थात् हानि, आश्विन में झगड़ा, कार्तिक में नौकरों को कष्ट, मार्गशीष एवं पौष में अन्नलाभ, माघ में अग्निभय तथा फाल्गुन में गृहारम्भ करने पर धनलाभ होता है। यथा-

चैत्रे शोककरं गृहादिरचितं स्यान्माधवेर्थप्रदम्
ज्येष्ठे मृत्युकरं शुचौ पशुहरं तद्वृद्धिदं श्रावणे।

शून्यं भाद्रपदेत्विषे कलिकरं भृत्यक्षयं कार्तिके
धान्यं मार्गसहस्ययोर्दहनभीर्माघे श्रियं फाल्गुने।।

पूर्वोक्त श्लोक में कथित फल को आप इस तालिका के माध्यम से भी समझ सकते है

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद
शुभाशुभफल	शोक	धन लाभ	मृत्युदायक	पशुहानि	पशुवृद्धि	शून्यता

मास	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
शुभाशुभ फल	कलह	सेवकनाश	धान्यलाभ	धान्यलाभ	अग्निभय	धनलाभ

इस प्रकार से इन मासों में गृहारम्भ करने से गृहपति को उपरोक्त शुभाशुभ फल प्राप्त होता है। यह शुभाशुभ फल चान्द्रमासों के आधार पर बताया गया है। बृहद्वास्तुमाला नामक ग्रन्थ में नारद जी के मत के अनुसार मार्गशीर्ष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण और कार्तिक में गृहनिर्माण करना शुभ बताया गया है। यथा-

सौम्यफाल्गुनवैशाखमाघश्रावणकार्तिकाः।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यफलप्रदाः।।

योगेश्वराचार्य के मतानुसार चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ महीने गृहनिर्माण के लिए शुभ नहीं है। अतः इन मासों में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए-

आषाढचैत्राश्वयुजोर्जमाघज्येष्ठेषु सप्रौष्ठपदेषु नूनम्।
निकेतनानां घटनं नृपाणां योगेश्वराचार्यमते न शस्तम्।।

चन्द्रमासों के साथ सूर्य स्थित राशि के अनुसार भी गृहारम्भ विचार का उल्लेख है। इसके अनुसार वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ एवं फाल्गुन में गृहारम्भ शुभ है। लेकिन इन मासों में कन्या, मिथुन, धनु एवं मीन राशियों में स्थित सूर्य के दिनों को छोड़ देना चाहिए। यथा-

वैशाखे श्रावणे मार्गे माघे फाल्गुनके तथा।
कन्यायुग्मधनुर्मीनभिन्ने सूर्ये गृहं शुभम्।।

मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ में रामदैवज्ञ गृहारम्भ मासों का दिग्द्वार के अनुसार उल्लेख करते हुए कहते हैं कि फाल्गुन मास में कुम्भ के सूर्य हों, श्रावण में सिंह एवं कर्क राशि के सूर्य हो तथा पौषमास में मकर का सूर्य हो तो पूर्व एवं पश्चिमाभिमुख गृह का निर्माण शुभ होता है। वैशाख मास में मेष और वृष राशि का सूर्य हो तथा मार्गशीर्ष मास में तुला एवं वृश्चिक राशि का सूर्य हो तो उत्तराभिमुख एवं दक्षिणाभिमुख गृह का निर्माण शुभ होता है। यथा-

कुम्भेर्के फाल्गुने प्रागपरमुखगृहं श्रावणे सिंहकर्क्योः
पौषे नक्रे च याम्योत्तरमुखसदनं गोजगेर्के च राधे।
मार्गे जूकालिगे सत्----------।।

इसी प्रकार सूर्यमासों के आधार पर गृहारम्भ का शुभाशुभ फल भी मुहूर्त ग्रन्थों में वर्णित है। जैसे कि नारद के मत से सौरमास के अनुसार प्रशस्त मास इस प्रकार से हैं-

गृहसंस्थापनं सूर्ये मेषस्थे शुभदं भवेत्।
वृषस्थे धनवृद्धिः स्यान्मिथुने मरणं ध्रुवम्।।

कर्कटे शुभदं प्रोक्तं सिंहे भृत्यविवर्धनम्।
कन्यारोगं तुले सौख्यं वृश्चिके धनवर्धनम्।।

कार्मुके तु महाहानिर्मकरे स्याद्धनागमः।
कुम्भे तु रत्नलाभः स्यान्मीने सद्मभयावहम्।।

निम्नलिखित तालिका के माध्यम से सूर्य के विविध राशियों में संचार के फलस्वरूप गृहारम्भ का शुभाशुभ फल का ऊपर वर्णन किया गया है, जो कि इस प्रकार है –

सूर्य – राशि	**मेष**	**वृष**	**मिथुन**	**कर्क**	**सिंह**	**कन्या**
शुभाशुभ फल	शुभ	धनवृद्धि	मृत्यु	शुभ	भृत्यवृद्धि	रोग

सूर्य – राशि	**तुला**	**वृश्चिक**	**धनु**	**मकर**	**कुम्भ**	**मीन**
शुभाशुभ फल	सुख	धनवृद्धि	महत् हानि	धनागम	रत्नलाभ	भयप्रद

आचार्यों के मतान्तर से मेष के सूर्य में चैत्रमास, वृष के सूर्य में ज्येष्ठमास, कर्क राशिस्थ सूर्य में आषाढ़ मास, सिंह राशि के सूर्य में भाद्रपद मास, तुला के सूर्य में आश्विन मास, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिकमास, मकर के सूर्य में पौषमास और कुम्भ के सूर्य में माघ मास होने पर गृहारम्भ करना शुभ होता है। यथा-

कैश्चिन्मेषरवौ मधौ वृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटे।
भाद्रे सिंहगते घटेश्वयुजि चोर्जेलौ मृगे पौषके।।
माघे नक्रे घटे शुभं निगदितं गेहं तथोर्जे न सत्।
कन्यायां च तथा धनुष्यपि न सत्कृष्णादिमासाद्भवेत्।।

यहाँ ध्यान देना है कि चान्द्रमासों की गणना कृष्णप्रतिपदा से आरम्भ कर पूर्णिमा तक करनी चाहिए। कन्या के सूर्य में कार्तिक मास और धनु के सूर्य में माघ मास होने पर गृहारम्भ नहीं करना चाहिए। श्रीपति के मतानुसार कर्क, मकर, सिंह एवं कुम्भ राशियों में सूर्य के रहने पर पूर्वाभिमुख एवं पश्चिमाभिमुख गृहों का निर्माणारम्भ शुभ है। जबकि तुला, मेष, वृष व वृश्चिक राशियों में सूर्य के रहने पर उत्तराभिमुख एवं दक्षिणाभिमुख गृहों का निर्माण करना चाहिए उनके मतानुसार मीन, धनु, कन्या एवं मिथुन राशियों में सूर्य के रहने पर गृह निर्माण करना रोग, शोक एवं धननाश रूपी अशुभफल देने वाला होता है। यथा-

कर्किनक्तहरिकुम्भगतेर्के पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि।
तौलिमेषवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरमुखानि च कुर्यात्।।
अन्यथा यदि करोति दुर्मतिर्व्याधिशोकधननाशमश्नुते।
मीनचापमिथुनाङ्गनागते कारयेन्न गृहमेव भास्करे।।

उपर्युक्त मास विचार नया गृहनिर्माण शुरू करने में करना चाहिए। पुराने अथवा टूटे फूटे भवन का जीर्णोद्धार करवाने के लिए पूर्वोक्त मासों के अलावा श्रावण, कार्तिक एवं माघ मास भी उत्तम हैं-

जीर्णोद्धारे जलाग्नादिभयतः पतिते गृहे।
श्रावणोर्जे तथा माघे कारयेत्सुखदं गृहम्।।
देवालयं तडागञ्च वाटिकोद्धरणं गृहम्।
गृहमासोदितं शस्तं माघेपि मुनिसत्तम।।

घास-फूस या लकड़ी से बनाये जाने वाले भवनों में मास विचार की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु पत्थर या ईटों से बनाये जाने वाले भवनों में उपर्युक्त मास विचार आवश्यक है। जैसे कि कहा गया है-

तृणदारुगृहारम्भे मासदोषो न विद्यते।
पाषाणेष्ट्यादिगेहानि निन्द्यमासे न कारयेत्।।

ज्येष्ठ मास में पशुगृह, आश्विन में धान्य भण्डारगृह, माघ मास में जल भण्डारण गृह तथा चैत्रमास में धारागृह अर्थात् फब्बारे इत्यादि का निर्माण शुभ होता है। जैसा कि आचार्यों ने कहा है –

शस्तं पशुगृहं ज्येष्ठे चाश्विने धान्यनीडकम्।
पानीयशालिका माघे चैत्रे धारागृहं तथा।।

इस प्रकार से सूर्यमासों और चान्द्रमासों दोनो को विचार कर शुभ मासों में ही गृहारम्भ करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

19. बुद्धिमानों को गृहारम्भ का शुभ समय क्यों बतलाना चाहिए?
20. प्रश्नकाल से गृहारम्भ का आदेश कब करना चाहिए?
21. गृहस्थ की सभी क्रियायें किस के विना पूर्ण नही हो सकती?

22. वृद्धनारद के मत के अनुसार गृहादि निर्माण का आरम्भ एवं समाप्ति में कब नहीं करना चाहिए?
23. वसिष्ठ के मत से गुरु एवं शुक्र के अस्त रहने पर गृहारम्भ करना चाहिए या नहीं?
24. शुक्लपक्ष में कब गृहारम्भ शुभ होता है?
25. कृष्णपक्ष में गृहारम्भ करने से क्या फल होता है ?
26. होलाष्टक क्या है?
27. होलाष्टक में क्या वर्जित है ?
28. होलाष्टक का विचार किन देशों में होता है?
29. वास्तु कृत्य अर्थात् गृहारम्भ, नींव खोदना इत्यादि कार्य किस किस काल में निषिद्ध है?
30. वृद्ध नारद जी के मतानुसार चैत्र मास में गृहादि का निर्माण करने पर क्या फल मिलता है?
31. वृद्ध नारद जी के मतानुसार मार्गशीर्ष एवं पौष मास में गृहादि का निर्माण करने पर क्या फल मिलता है ?
32. नारद जी के मत के अनुसार किन मासों में गृहनिर्माण करना शुभ बताया गया है?
33. योगेश्वराचार्य के मतानुसार गृहनिर्माण के लिए कौन से मास शुभ नहीं है?
34. वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ एवं फाल्गुन में गृहारम्भ शुभ है, लेकिन इन मासों में किन राशियों में स्थित सूर्य के दिनों को छोड़ देना चाहिए?
35. मुहूर्तचिन्तामणि के अनुसार पूर्व एवं पश्चिमाभिमुख गृह का निर्माण कब शुभ होता है?
36. मुहूर्तचिन्तामणि के अनुसार उत्तर एवं दक्षिणाभिमुख गृह का निर्माण कब शुभ होता है?
37. मिथुन राशि में सूर्य रहने पर सामान्यतः क्या फल होता है?
38. पौष मास में भी गृहारम्भ कब शुभ हो सकता है?
39. गृहारम्भ हेतु चान्द्रमासों की गणना किस प्रकार से करनी चाहिए?
40. श्रीपति के मतानुसार कर्क, मकर, सिंह एवं कुम्भ राशियों में सूर्य के रहने पर किन गृहों का निर्माणारम्भ शुभ है?
41. श्रीपति के मतानुसार मीन, धनु, कन्या एवं मिथुन राशियों में सूर्य के रहने पर गृह निर्माण करने पर क्या फल मिलता है ?
42. पुराने अथवा टूटे फूटे भवन का जीर्णोद्धार करवाने के लिए गृहारम्भोक्त मासों के अलावा कौन से मास भी उत्तम हैं?
43. किन भवनों में मास विचार की आवश्यकता नहीं होती है?
44. पशुगृह का निर्माण किस मास में शुभ होता है ?
45. चैत्रमास में किस का निर्माण शुभ होता है?

2.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आपने जाना कि हमारे जीवन में गृहनिर्माण का अत्यधिक महत्व है। गृहनिर्माण के महत्व को वास्तुशास्त्र के आचार्यों ने कहा है। ज्योतिषशास्त्र के

आचार्यों ने गृहनिर्माण रूपी इस शुभ कार्य में मुहूर्त चिन्तन को अत्यन्त आवश्यक माना है। अगर गृह निर्माण का आरम्भ शुभ समय में किया जाए तो उस गृह का निर्माण कार्य अत्यन्त द्रुत गति से तथा विना किसी बाधा के सम्पन्न हो जाता है और अगर गृह निर्माण का आरम्भ अशुभ समय में किया जाए तो गृह निर्माण का कार्य अत्यन्त मन्द गति से चलता है और गृहपति को निर्माण कार्य में अनेकों बाधाओं का सामना करना पडता है और कई बार तो निर्माण कार्य भी अपूर्ण ही रह जाता है अतः गृह के निर्माण कार्य का आरम्भ सदैव शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह ऋषियों द्वारा प्रणीत मुहूर्त ग्रन्थों के आधार पर शुभ समय का चयन कर गृह-निर्माण कार्य का शुभारम्भ करें ताकि गृह-निर्माण कार्य निर्विघ्न रुप से सम्पन्न हो सके तथा गृहजनो को उस गृह में सुख ,शान्ति और समृद्धि की प्राप्ति हो सके। अतः आपने इस पाठ में गृहारम्भ मुहूर्त के महत्वपूर्ण आयामों वृषवास्तु चक्र एवं गृहारम्भ के लिए मासादि विचार पर विशेष अध्ययन किया हैं।

आपने जाना कि गृहारम्भ के दिन के चन्द्र नक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र की गणना के आधार पर वास्तुक्षेत्र की शुभता या अशुभता का अनुमान करना ही चक्रशुद्धि विचार है। इस चक्रशुद्धि विचार को हम वृषवास्तुचक्र द्वारा जान सकते है। इस हेतु वास्तु पुरूष की कल्पना बैल के रूप में की गयी है जिसके शरीर में सूर्य नक्षत्र से गिनकर नक्षत्र स्थापित करना चाहिए। इसमें चन्द्रस्थित नक्षत्र की स्थिति को देखकर शुभ या अशुभ फल समझना चाहिए। इस चक्र में अभिजित् सहित 28 नक्षत्रों की गणना होती है। वृषवास्तु चक्र के सम्बन्ध में विभिन्न मतों का अध्ययन के निष्कर्ष में आपने जाना कि कि सूर्य जिस नक्षत्र पर स्थित हो, वहां से 3 नक्षत्र शिर पर, उससे आगे के 4 नक्षत्र अगले पैरों पर होते है। ये सातों नक्षत्र क्रमशः अग्निदाह और शून्यफलकर्ता है अतः इनमें गृहारम्भ नही करना चाहिए। इसके आगे के क्रमशः 4 नक्षत्र पिछले पैर पर, 3 नक्षत्र पीठ पर और 4 नक्षत्र दाहिनी कोख में रहते है इनमें गृहारम्भ करने से क्रमशः स्थिरता, धनप्राप्ति तथा लाभ होता है। इन ग्यारह नक्षत्रों में ही गृहारम्भ करना चाहिए। इसके बाद शेष 3 नक्षत्र पूँछ पर , 4 नक्षत्र बायीं कोख में तथा 3 नक्षत्र मुख में होते है। इनका फल क्रमशः स्वामीनाश ,दरिद्रता तथा पीडादायक रहता है अतः इन नक्षत्रों में भी गृहारम्भ नहीं करना चाहिए। इसी प्रसंग में आपने जाना कि कुछ विद्वानों के अनुसार गृहारम्भ में वृषवास्तु चक्र की तरह ही कूर्मचक्र का विचार भी करना चाहिए। जिसके विषय में भी आपने विस्तार से अध्ययन किया।

तत्पश्चात् आपने जाना कि कर्मसिद्धि, सुख एवं आयुष्य के लिए निमित्त, शकुन आदि का विचार कर बुद्धिमानों को गृहारम्भ समय बतलाना चाहिए। इसलिए सर्वप्रथम गृहारम्भ हेतु कालशुद्धि के विषय में आपने जाना कि गृहादि निर्माण का आरम्भ एवं समाप्ति भगवान् विष्णु के शयन दिवसों अर्थात् आषाढ़ शुक्ल एकादशी (हरिशयनी एकादशी) से कार्तिक शुक्ल एकादशी (हरिबोधिनी एकादशी) तक में नहीं करना चाहिए। वसिष्ठ का मत है कि गुरु एवं शुक्र के उदय रहने पर ही गृहारम्भ करना चाहिए, अस्त होने पर नहीं। इसी प्रकार शुक्लपक्ष में दिन में ही गृहारम्भ शुभ होता है। रात्रि में निर्माण कार्य शुभ नहीं होता। होलाष्टक को भी विवाहादि शुभ कार्यों में निषिद्ध होने के कारण गृहारम्भ में भी नहीं लेना चाहिए। इसी प्रकार वास्तु कृत्य अर्थात् गृहारम्भ, नींव खोदना इत्यादि कार्य ठीक मध्याह्न में, दोनों सन्ध्या कालों में तथा मध्य रात्रि में नहीं करना चाहिए। है। अधिकमास, भीष्मपंचक, श्राद्धपक्ष इत्यादि में भी सामान्यतः गृहारम्भ नहीं करते है। इसके बाद आपने गृहारम्भ हेतु ग्राह्य एवं अग्राह्य मासों के बारे में विस्तार से अध्ययन किया। जिसमें आपने जाना कि चैत्र मास में गृहादि का निर्माण करने पर

शोक, वैशाख में धनलाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशु हरण, श्रावण में पशुवृद्धि, भाद्रपद में शून्य अर्थात् हानि, आश्विन में झगड़ा, कार्तिक में नौकरों को कष्ट, मार्गशीष एवं पौष में अन्नलाभ, माघ में अग्निभय तथा फाल्गुन में गृहारम्भ करने पर धनलाभ होता है। चन्द्रमासों के साथ सूर्य स्थित राशि के अनुसार भी गृहारम्भ विचार का उल्लेख है। इसके अनुसार वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ एवं फाल्गुन में गृहारम्भ शुभ है। लेकिन इन मासों में कन्या, मिथुन, धनु एवं मीन राशियों में स्थित सूर्य के दिनों को छोड़ देना चाहिए। उपर्युक्त मास विचार नया गृहनिर्माण शुरू करने में करना चाहिए। पुराने अथवा टूटे फूटे भवन का जीर्णोद्धार करवाने के लिए पूर्वोक्त मासों के अलावा श्रावण, कार्तिक एवं माघ मास भी उत्तम हैं। घास-फूस या लकड़ी से बनाये जाने वाले भवनों में मास विचार की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु पत्थर या ईटों से बनाये जाने वाले भवनों में उपर्युक्त मास विचार आवश्यक है। **इस प्रकार से आपने जाना कि सूर्यमासों और चान्द्रमासों दोनो को विचार कर शुभ मासों में ही गृहारम्भ करना चाहिए।**

2.7 पारिभाषिक शब्दावली

द्रुत गति – तेज गति

अभिजित् - अभिजित् मान उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अन्तिम चरण तथा श्रवण के कुलमान के पन्द्रहवें भाग के जोड़ के बराबर माना गया है। यदि हम उत्तराषाढ़ा श्रवण दोनों नक्षत्रों का 60 घटी-60 घटी मानें तो अभिजित् का कुल मान 19 घटी के बराबर आ जायेगा। अभिजित् की गणना उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के बाद तथा श्रवण नक्षत्र के पूर्व होती है।

वृषवास्तुचक्र - गृहारम्भ के दिन के चन्द्र नक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र की गणना के आधार पर वास्तुक्षेत्र की शुभता या अशुभता का अनुमान करना ही चक्रशुद्धि विचार है। इस हेतु वास्तु पुरूष की कल्पना बैल के रूप में की गयी है जिसके शरीर में सूर्य नक्षत्र से गिनकर नक्षत्र स्थापित करना चाहिए। इसमें चन्द्रस्थित नक्षत्र की स्थिति को देखकर शुभ या अशुभ फल निम्न प्रकार से समझना चाहिए।

कुक्षि – कोख, पेट

भगवान् विष्णु के शयन दिवस - आषाढ़ शुक्ल एकादशी (हरिशयनी एकादशी) से कार्तिक शुक्ल एकादशी (हरिबोधिनी एकादशी) तक।

होलाष्टक - फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तक अर्थात् होली से पूर्व के 8 दिन।

वास्तु कृत्य - गृहारम्भ, नींव खोदना इत्यादि

पूर्वाह्ण – सूर्योदय से मध्य दिन (मध्याह्न) तक

अपराह्ण - मध्य दिन (मध्याह्न) से सूर्यास्त तक

पश्चिमाभिमुख गृह – पश्चिम की दिशा में मुख्य द्वार वाला गृह

अधिकमास - जिस चान्द्रमास में संक्रान्ति नहीं होती है उसे अधिकमास या मलमास कहा जाता है। यहां चान्द्रमास का मान शुक्लप्रतिपदा से अमावस्या तक ग्रहण करना चाहिए। इसमें मांगलिक कृत्य नहीं किए जाते है।

भीष्म पंचक - कार्तिक शुक्लएकादशी से कार्तिक शुक्लपूर्णमासी तक भीष्म पंचक होता है।

इसमें मांगलिक कृत्य नहीं किए जाते हैं।

श्राद्धपक्ष - पूर्णिमान्त मान से आश्विन कृष्ण पक्ष में पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध पक्ष होता है। इसमें भी मांगलिक कृत्य नहीं किए जाते हैं।

गुरु-शुक्र का उदय और अस्त - गुरु एवं शुक्र ग्रह सूर्य के अत्यधिक निकट होकर जब सामान्य आँखों से दिखलाई नहीं देते उन्हें अस्त कहा जाता है। पुनः वे सूर्य कुछ दूर हटकर दिखलाई पड़ते हैं तो उनका उदय कहा जाता है। सामान्यतयः गुरु शुक्र उदय-अस्त की तारीखों का पंचांगों में विशेष उल्लेख रहता है।

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. वापी, देवमन्दिरादि के निर्माण का
2. गृह निर्माण का कार्य अत्यन्त मन्द गति से चलता है और गृहपति को निर्माण कार्य में अनेकों बाधाओं का सामना करना पडता है, कई बार तो निर्माण कार्य भी अपूर्ण ही रह जाता है। अतः गृह के निर्माण कार्य का आरम्भ सदैव शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए।
3. वृषवास्तुचक्रशुद्धि विचार
4. बैल
5. अभिजित् सहित 28 नक्षत्रों की
6. सूर्य नक्षत्र से 3 नक्षत्र तक
7. वज्रपात या अग्निदाह
8. बायें कुक्षि में दारिद्र्य
9. अशुभ
10. सात
11. एकादश अर्थात् ग्यारह
12. चार
13. चार
14. तीन
15. धनागम
16. उद्वेग, रिक्तता या शून्यता
17. कूर्मचक्र के अनुसार तिथि को 5 से गुणा कर कृत्तिकादि से वर्तमान चन्द्रनक्षत्र तक गणना कर प्राप्त संख्या को जोडने पर और उसमे 12 जोड कर 9 से भाग देने पर जो 1,4,7 शेष बचे तो लाभ, शेष 2,5,8 में हो तो हानि तथा 0,3,6 शेष में मृत्यु होती है।
18. शेष शून्य है अतः इस दिन कूर्म का निवास आकाश में है जिसके कारण इस दिन गृहारम्भ करने पर कष्ट मिलने की सम्भावना होती है।
19. कर्मसिद्धि, सुख एवं आयुष्य के लिए निमित्त, शकुन आदि का विचार कर बुद्धिमानों को गृहारम्भ समय बतलाना चाहिए।

20. प्रश्नकाल में प्रश्नकर्त्ता जिस अङ्ग का स्पर्श कर प्रश्न करे, कालपुरुष का वह अङ्ग यदि शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो गृहारम्भ का आदेश करना चाहिए।
21. गृह के विना
22. भगवान् विष्णु के शयन दिवसों अर्थात् आषाढ़ शुक्ल एकादशी (हरिशयनी एकादशी) से कार्तिक शुक्ल एकादशी (हरिबोधिनी एकादशी) तक
23. गृहारम्भ नहीं करना चाहिए
24. दिन में ही, रात्रि में निर्माण कार्य शुभ नहीं होता।
25. चोरों का भय बना रहता है
26. फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तक अर्थात् होली से पूर्व के 8 दिन का होलाष्टक होता है।
27. होलाष्टक भी विवाहादि शुभ कार्यों में निषिद्ध होने के कारण गृहारम्भ में भी नहीं लेना चाहिए।
28. विपाशा नदी (व्यास), इरावती (रावी), शतुद्रु (सतलज) के तटवर्ती तथा त्रिपुष्कर में होलिका से पूर्व के आठ दिन विवाहादि शुभ कार्यों के लिए शुभ नहीं हैं।
29. ठीक मध्याह्न में, दोनों सन्ध्या कालों में तथा मध्य रात्रि में वास्तुकृत्य नहीं करना चाहिए।
30. शोक
31. मार्गशीष एवं पौष में अन्नलाभ
32. मार्गशीर्ष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण और कार्तिक मास
33. चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ महीने
34. कन्या, मिथुन, धनु एवं मीन राशियों में
35. फाल्गुन मास में कुम्भ के सूर्य हों, श्रावण में सिंह एवं कर्क राशि के सूर्य हो तथा पौषमास में मकर का सूर्य हो तो पूर्व एवं पश्चिमाभिमुख गृह का निर्माण शुभ होता है।
36. वैशाख मास में मेष और वृष राशि का सूर्य हो तथा मार्गशीर्ष मास में तुला एवं वृश्चिक राशि का सूर्य हो तो उत्तराभिमुख एवं दक्षिणाभिमुख गृह का निर्माण शुभ होता है।
37. मिथुन राशि में सूर्य रहने पर मृत्यु भय होता है।
38. पौषमास में मकर राशि में सूर्य रहने पर।
39. कृष्णप्रतिपदा से आरम्भ कर पूर्णिमा तक।
40. पूर्वाभिमुख एवं पश्चिमाभिमुख गृहों का।
41. यह रोग, शोक एवं धननाश रूपी अशुभफल देने वाला होता है।
42. श्रावण, कार्तिक एवं माघ मास
43. घास-फूस या लकड़ी से बनाये जाने वाले भवनों में
44. ज्येष्ठ
45. धारागृह अर्थात् फब्बारे इत्यादि का निर्माण

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1- गृहनिर्माण में मुहूर्त विचार के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

2- सोदाहरण वृषवास्तु चक्र पर सुविस्तृत निबन्ध लिखिए।

3- सोदाहरण कूर्मचक्र को स्पष्ट कीजिए।

4- गृहारम्भ में कालशुद्धि पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

5- गृहारम्भ में मास विचार पर सुविस्तृत प्रकाश डालिए।

2.10 सन्दर्भ/ सहायक पाठ्य सामग्री

1- मुहूर्त चिन्तामणि, दैवज्ञ श्रीरामाचार्य, टीका-केदारदत्त जोशी, पीयूषधारा टीकासहित, (द्वितीयसंस्करण पुनर्मुद्रण 1995), बनारसीदास,

2. बृहद्वास्तुमाला, श्रीरामनिहोराद्विवेदी, सम्पादन- डॉ अशोक थपलियाल (संस्करण 2013) अमर पब्लिकेशन्स, विजयनगर दिल्ली।

3. भारतीय वास्तुशास्त्र (संस्करण 2004) प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी, श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, नई दिल्ली

4- वास्तुसार, (संस्करण 2006) प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी परिक्रमा प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली

5. वास्तुप्रबोधिनी (संस्करण 2011), डॉ. अशोक थपलियाल,अमर पब्लिकेशन्स, विजयनगर दिल्ली।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY